उत्तम ज्ञान सर्वज्ञा का पर्यायः आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह 26 से, आज होगा जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का समापन

केलवाः 16 सितम्बर

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि सबसे उत्तम ज्ञान सर्वज्ञा है। जैन आगमों का मूल आधार है सर्वज्ञ ज्ञान। इससे बडा ओर कोई नहीं होता। ज्ञान से ज्यादा कुछ नहीं होता। उसके जैसा दूसरा बन सकता है पर उनमें ज्यादा ज्ञान नहीं होता। व्यक्ति में थोडा ज्ञान होता है और उसमें अहंकार आ जाता है। पात्र में थोडा ज्यादा पानी आ जाता है तो वह छलकता है और पूरा भरा हुआ नहीं छलकता। यह उद्‌गार आचार्यश्री ने शुक्रवार को यहा तेरापंथ समवसरण में दैनिक प्रवचन के दौरान व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि व्यक्ति में सर्वज्ञा होने के बाद अहंकार का भाव नहीं आना चाहिए। जब तक अहंकार रहता है। व्यक्ति सर्वज्ञ नहीं बन सकता। जो अपने अज्ञान को जान लेता है वह बडा ज्ञानी बन जाता है। शिक्षकों अपने विषय का ज्ञान होता है, लेकिन वे सर्वज्ञ नहीं होते। संसार में अनेक विषय है उनका ज्ञान नहीं है। जो सर्वज्ञ है उसे एक साथ सभी का ज्ञान हो सकता है। ज्ञान के साथ आचार का विकास भी होना चाहिए। विचार और आचार नदी के दो पाट की तरह है। उनके बीच एक पुल अवश्य होना चाहिए। जब ऐसा पुल होगा तभी विचार आचार में सम्मिलित हो सकेगा। आचार में आने पर व्यवहार में ज्ञान केवल दिमागी नहीं रहता। उन्होंने कहा कि समाज में धर्म संत भी बहुत है। परन्तु खास बात यह है कि उनमें उपदेश की बातें है। वह जीवन में आ जाए। केवल ग्रंथों से कल्याण नहीं होगा। जो आध्यात्म शास्त्रों को आत्मसात नहीं करता वह दुख को संवेदन करता है। ग्रंथों को खरीद लिया, पर पढा नहीं, जीवन में उतारा नही तो वे आधारहीन हो जाते है। हालांकि कई ग्रंथ घर में रखना अच्छा है। कभी पढने का भाव निमित्त हो सकता है। जब उसका अध्ययन होगा और पढा जाएगा तो आध्यात्म के सूत्र प्राप्त होंगे। पुस्तकें हमारी गुरु होती है। उससे ज्ञान मिलता है। हम स्वाध्याय करने का प्रयास करें। इसकी प्रवृति पवित्र आनंद को प्राप्त करने में सहायक बनती है। चेहरा भले ही कितना सुन्दर क्यों न हो, ज्ञान उससे ज्यादा आवश्यक है। कुरुप चेहरे वाला भी बडा ज्ञानी हो सकता है। ज्ञान, आचार और दक्षता

का मूल्य है। जो आदमी शरीर को महत्व देता है। ज्ञान, आचार और व्यवहार को प्राथमिकता प्राथमिकता नहीं देता तो मानना चाहिए कि उसका दृष्टिकोण सही नहीं है। चेहरा सुन्दर हैं, लेकिन चरित्र सुन्दर नहीं है तो वह सुन्दर चेहरा क्या काम करेगा। हम चेहरे को नहीं चरित्र को महत्व दें। जो चरित्र से हीन हो गया वो जीते जी मरा हुआ है। चातुर्मास चल रहा है। लोग दूर दूर से आ रहे है। केलवा लोगों का संगम बन गया है। संतों की वाणी सुनना, सान्निध्य में रहना अच्छी बात है। उसके साथ वह वाणी में उतर जाए तो सोने पर सुहागा वाली कहावत चरितार्थ हो जाएगी।

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि जीवन में शब्द का बडा महत्व है। शब्द में व्यक्ति जानता है और व्यवहार पाता है। शब्द नहीं है तो दूसरों के विचार नहीं जान सकेगा। हम वस्तु को जानने का प्रयास करें। उसके रहस्य, मूल तक जाने का प्रयास करें। हमने सम्यक ज्ञान किया है, अध्यात्म के रहस्यों को जाना है। उसकी जीवन में ग्रहणता जरुरी है। इसे जीवन के रुप में अंगीकार करना होगा। तभी जानना आवश्यक है। जीवनगत होने से ज्ञान आत्मगत हो सकता है। धर्म को जानते सब है पर जीने का प्रयास नहीं करते तो धर्म का फल नहीं मिल पाता है और धर्म की शक्ति धूमिल होती नजर आती है। धर्म जीने की वस्तु है। जब धर्म को जीया जाएगा तभी उसकी चमत्कारिक शक्ति हमारे जीवन को सुखी और शांतिमय बनाएगा।

इस अवसर पर मुनि धर्म रूचि ने मुनि वत्सराज की दो पुस्तकें दिल रो दरियों और पंतरणि प्रेक्षा को आचार्यश्री के करकमलों में भेंट की। इस पर आचार्यश्री ने कहा कि वत्सराज स्वामी हमारे धर्मसंघ के उच्चकोटि के गीतकार है। गीत बहुत उपयोगी है। मुनिश्री अब अवस्था प्राप्त हो गए है। वे जहां भी रहे साहित्य जगत को समृद्ध करते रहे। स्वाध्याय को प्राप्त करते रहे। समण सिद्धप्रभ और उपासक निर्मल नौलखा ने अमरीका की 21 दिवसीय प्रवास कर लौटने अपने अनुभव प्रस्तुत किए। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह 26 से

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा उद्‌घोषित अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह केलवा में 26 से 2 अक्टूबर तक आयोजित किया जाएगा। इस दौरान विभिन्न आयोजन होंगे। सत्ताह के पहले दिन 26 सितम्बर को पर्यावरण शुद्धि दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर भाषण, चित्रकला, नाटक, गायन प्रतियोगिता और प्रदर्शनियां लगाई जाएगी। 27 सितम्बर को जीवन विज्ञान दिवस के मौके पर शिक्षण संस्थानों में इस विषय की जानकारी दी जाएगी। 28 सितम्बर को अणुव्रत प्रेरणा दिवस मनाया जाएगा। इस

दौरान अणुव्रत आधारित भाषण, निबंध और चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित होगी। 29 सितम्बर को सांप्रदायिक सौहार्द दिवस पर विभिन्न संप्रदाय के प्रमुखों और अनुयायियों के साथ बैठक और सर्वधर्म सम्मेलन, गोष्ठियां होगी। 30 सितम्बर को नशामुक्ति दिवस पर नुक्कड नाटक, गीत, प्रदर्शनी के माध्यम से सभी तरह के व्यसन से दूर रहने की प्रेरणा दी जाएगी। एक अक्टूबर को अनुशासन दिवस और 2 अक्टूबर को अहिंसा दिवस पर गोष्ठियां और प्रतियोगिताएं होगी।